संत विनोबा भावे

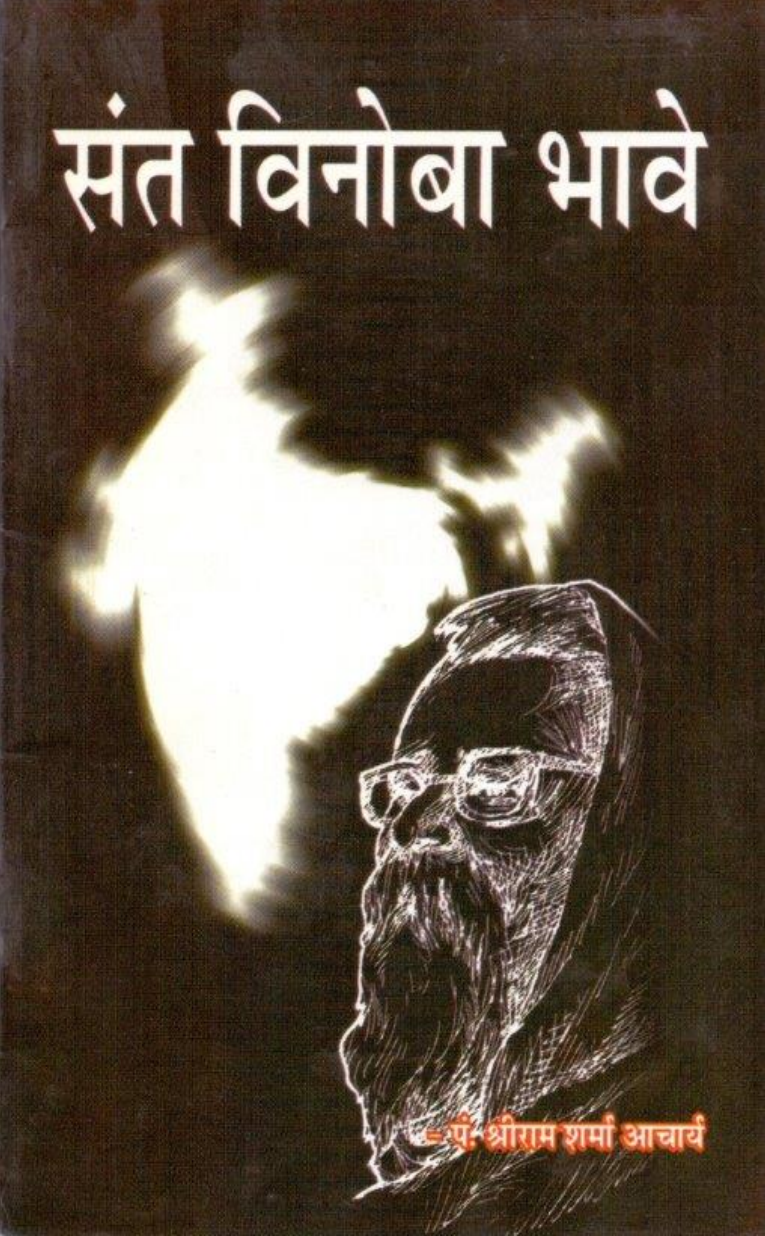

– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

ज्ञान-कर्म-भक्ति के समन्वय—

बाबा विनोबा

सन् १६५१ की बात है। आंध्र के तैलंगाना प्रदेश में साम्यवादियों का उत्पात चरम सीमा पर पहुँच गया था। कितने ही लोग मारे जा चुके थे। वे रात्रि के समय दल बनाकर किसी गाँव में जाते और वहाँ के बड़े आदमियों की संपत्ति, अनाज, फसल को लूट लाते थे। देशहितैषी व्यक्ति इस स्थिति से बहुत चिंतित थे। लूटने वाले प्रायः निर्धन किसान होते थे और लूटे जाने वाले धनवान् किसान, बौहरे और जमींदार श्रेणी के लोग। इससे यह तो प्रकट था कि इन मामलों को डकैती अथवा गुंडागर्दी नहीं कह सकते। उन लोगों का कहना भी यही था कि उनके पास खेती के लिये जमीन नहीं है, धनवान् लोग काम कराके भी बहुत थोड़ी मजदूरी देते हैं, ऐसी दशा में अगर हम लूटमार करके अपनी तथा अपने बाल-बच्चों की प्राण रक्षा न करें, तो और क्या करें ?

ये सब बातें बाबा विनोबा (जन्म १८९५ ई०) ने उस समय सुनीं, जब वे हैदराबाद के 'सर्वोदय-सम्मेलन' में ३०० मील की पैदल यात्रा करके गये थे। कांग्रेस पक्ष वाले ग्रामीण तैलंगाना के कम्युनिस्टों को 'रात का राजा' कहते थे। वे लोग सदा भयभीत रहते थे कि न मालूम कब ये 'राजा लोग' आकर लूट ले जायेंगे। अपने देश के एक भाग में लोगों की ऐसी निकृष्ट स्थिति विनोबा को सहन न हुई और उन्होंने इसको अपनी आँखों से देखने और शांति-स्थापना का कुछ प्रयत्न करने का निश्चय किया। हैदराबाद से चलकर वे 'पोचम पल्ली' पहुँचे, जिसे कम्युनिस्टों का गढ़ कहा जाता था। इसमें कुछ ही महीनों के भीतर चार खून हो चुके थे। यह भी मालूम हुआ कि गाँव की तीन हजार की आबादी में सिर्फ सात बच्चे पढ़ने को जाते हैं, जिनको एक 'गुरूजी' कभी-कभी आकर पढ़ा जाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। ताड़ी पीने का दुर्व्यसन बहुत जोरों पर है। ऐसे समाज में अपराध होना स्वाभाविक ही था।

विनोबा प्रातःकाल ही एक हरिजन मुहल्ले में पहुँचे और बातचीत करते हुए पूछा—"यह तो बताओ कि तुम्हारी गुजर कैसे होती है ?"

हरिजन—"उसका हाल क्या कहें, बाबा ? न तो हमें पूरा काम मिलता है और न हमारे जमीन ही है कि उसमें खोद खाएँ। हर दम पेट भरने के लाले पड़े रहते हैं। साल भर मेहनत करने पर जमींदार हमें खेत की उपज पीछे दो सेर गल्ला देते हैं, ओढ़ने को एक कंबल और पहनने को एक जोड़ी जूता। भला इतने में हमारी गुजर कैसे हो ? यदि हमें कुछ जमीन मिल जाए, तो हमारा संकट दूर हो सकता है।"

विनोबा—"अच्छा, कितनी जमीन में तुम्हारा काम चल जायगा ?"

हरिजन—"हमारे लिये ८० एकड़ जमीन काफी है। ४० एकड़ तरी वाली और ४० एकड़ खुश्की वाली जमीन मिल जाए, तो हमारी गुजर ठीक तरह होने लग जायेगी।"

विनोबा ने पहले तो हरिजनों से एक अर्जी लिखकर देने को कहा और सोचा कि सरकार से इस विषय में बातचीत करेंगे। फिर अकस्मात् उनके दिल में खयाल आया कि क्यों न यहाँ के गाँव वालों से इस विषय में चर्चा की जाए।

जैसे ही उन्होंने कुछ लोगों के समुदाय में यह बात प्रकट की कि तुरंत रामचंद्र रेड्डी नामक सज्जन ने खड़े होकर कहा—"बाबा मेरे पिताजी की बड़ी इच्छा थी कि अपनी कुछ जमीन इन भाइयों को दे दूँ। वे अब नहीं हैं। उनकी इच्छा पूरी करने के लिए मैं अपने पाँच भाइयों की तरफ से अपनी सौ एकड़ जमीन भेंट करता हूँ। आप उसे इन हरिजन भाइयों को देने की कृपा करें।"

गाँव की लक्ष्मी गाँव में रहे—

यह था भूदान-यज्ञ का श्री गणेश, जिसने आज एक विशाल आंदोलन का रूप धारण कर लिया है। अब तक लाखों एकड़ जमीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'दान स्वरूप' प्राप्त करके भूमिरहित लोगों को दी जा चुकी है, ग्रामों के लाखों व्यक्तियों से नशा और दुर्व्यसन छुड़ाकर गाँवों में सदाचार और नैतिकता का वातावरण उत्पन्न किया गया है और आपस के लड़ाई-झगड़े तथा मुकदमेबाजी मिटाकर लोगों को एक सूत्र में संगठित होने की प्रेरणा दी गई है। विनोबा गाँव वालों को समझाते हैं, कि उसका कल्याण तभी हो सकता है, जब 'गाँव की लक्ष्मी गाँव में ही रहे। आजकल वह बड़ी तेजी से शहरों की तरफ भाग रही है। अगर उसे रोका न जा सका, तो गाँव अवश्य बरबाद हो जायेंगे। इस संबंध में उनके उपदेश का सारांश इन शब्दों में दिया जा सकता है—

"गाँव की लक्ष्मी पाँच रास्तों से भागती है, वे हैं—शादी, ब्याह, बाजार व्यसन, साहूकार और सरकार। जब तक इनको रोका न जायेगा तब तक गाँव का भला नहीं हो सकता।

(१) गाँव वाले शादी-ब्याह में अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च कर देते हैं। कर्ज भी ले लेते हैं। लड़की सुसराल में जाकर गृहस्थी सँभालने लगती है, फिर भी माँ-बाप को कर्ज से छुटकारा नहीं मिलता। इसलिए ब्याह के खर्च में कमी की जाए। भोज-समारोह की क्या जरूरत है ? मैं समारोह को भी रोकना नहीं चाहता, पर उसमें खर्च करने का तरीका बदल देना चाहिए। लड़के-लड़की की शादी माँ-बाप ठीक करें। उसके बाद उनका काम खत्म। शादी करना, उसका जलसा करना, यह काम गाँव के जिम्मे रहे। खर्च का सारा बोझ थोड़ा-थोड़ा करके सब गाँव वाले बाँट लें। इससे कर्ज नहीं लेना पड़ेगा और ब्याह का काम आनंद से निपट जायगा।

(२) बाजार का रास्ता बंद किये बिना गाँव वालों का काम नहीं चल सकता। वे कपास पैदा करते हैं, पर उसे बाजार में बेचकर वहीं से कपड़ा खरीदते हैं। गन्ना पैदा करते हैं, उसे बेचकर शहर से चीनी (शक्कर) खरीदते हैं। मूँगफली, तिल और सरसों पैदा करते हैं, पर तेल बाहर से खरीदकर लाते हैं। अब इतना ही बाकी रह गया है कि वे अनाज भेजकर बाहर से 'रोटियाँ' मँगा लें। अगर इस तरह सब चीजें बाजार से ली जायेंगी, तो तुमको निर्धन रहना पड़ेगा। इसलिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नमक, मिट्टी का तेल, मिर्च-मसाला, दियासलाई और औजार गाँव में भले ही बाहर से लाने पड़ें, पर और चीजें गाँव में ही बना लो। शहर की चीजें गाँव में ही बना लो और गाँव की ही चीजें खरीदो।

"हर गाँव को हरा-भरा गोकुल बनाना है। वह अपने पैरों पर खड़ा हो, उसमें सब लोग हट्टे-कट्टे तंदुरुस्त हों, सब मेहनती हों, सब एक दूसरे से प्रेम करते हों। ईख का कोल्हू चल रहा है, चरखा कत रहा है, धुनिया धुन रहा है, तेल का कोल्हू चूँ-चर बोल रहा है, कुएँ पर मोट चल रही है, ग्वाला गायें चरा रहा है और बंशी बजा रहा है। ऐसा गाँव बनने दो। इसी का नाम है—गोकुल।

(३) दुर्व्यसन बिलकुल मिट जाने चाहिए। कुछ लोग दिन भर बीड़ी फूँकते रहते हैं। वे कहते हैं कि—'बीड़ियाँ तो घर की बनी हैं, बाहर से थोड़े ही आती हैं।' अरे भाई, जहर अगर घर का हो, तो क्या खा लोगे ? तो जहर चाहे घर का हो चाहे बाहर का, उसे तो छोड़ ही देना है। व्यसन सभी बुरे हैं। बीड़ी हो या शराब—सबको छोड़ना जरूरी है। हिंदू धर्म में भी इसकी मनाही है और मुसलमानी धर्म में भी उसे बुरा कहा गया है। साथ ही बात-बात में तकरार करना भी छोड़ दो। अगर कभी हो जाय तो गाँव के पाँच जने मिलकर उसे सुलझा लो।

(४) अगर गाँव वाले ऊपर की तीन शिक्षाओं पर अमल करने लगेंगे, तो फिर कर्ज लेने की जरूरत ही नहीं रह जायेगी। धीरे-धीरे साहूकारों के फंदे से छूटने की कोशिश करनी चाहिए। पर कर्ज के फेर में पड़कर बाल-बच्चों की फिक्र करना बंद मत कर दो। खुद भी भरपेट खाओ और बच्चों को भी खिलाओ। घर की जरूरत पूरी होने पर जो बचे उससे कर्ज चुकाते जाओ और नया कर्ज कभी न करो।

(५) जब इस तरह तुम चार मार्गों को रोककर लक्ष्मी को गाँव में ठहराये रहोगे तो सरकार स्वयं ही रास्ते पर आ जायेगी। लक्ष्मी तो दरअसल गाँव में ही रहती है। पेड़ों में फल लगते हैं, खेतों में गेहूँ होता है, गन्ना होता है—यही तो सच्ची लक्ष्मी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईशावास्यमिदं सर्वं—

विनोबा गीता और उपनिषदों के बड़े अच्छे ज्ञाता थे। गीता पर उनका प्रवचन वर्तमान समय के लिये धर्म का एक विशेष मार्गदर्शन माना गया है। विनोबा ने उसके आरंभ में ही स्पष्ट कह दिया है कि 'गीता' किसी विशेष संप्रदाय या खास युग से बँधी नहीं है, वरन् उसका सिद्धांत इतना सर्वकालीन और विकसनशील है कि पाँच हजार वर्ष पूर्व आज से सर्वथा भिन्न वातावरण और समाज-संगठन में कही जाने पर भी वह इस बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक युग में भी वैसी ही उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसका मूल कारण बताते हुए उन्होंने लिखा है—"पुरानी संज्ञा परिभाषा को नया अर्थ प्राप्त करा देना गीता की प्रवृत्ति है। पुराने शब्दों में नया अर्थ उन्मीलित करना विचारक्रांति की अहिंसक प्रक्रिया है। भगवान् व्यास इस कला में अति कुशल हैं। इसलिये गीता के शब्दों का सामर्थ्य विकासशील रहा है। अपनी-अपनी आवश्यकता और अनुभव के अनुसार विचारक तत्त्वदर्शी उसमें से विविध अर्थ पाते हैं। विचारकों की भूमिका के अनुसार सभी अर्थ समुचित हो सकते हैं।"

ऐसी ही विवेचना उन्होंने "ईशावास्योपनिषद्" की व्याख्या में की है। इस उपनिषद् का मुख्य सिद्धांत इसके पहले श्लोक में ही बतला दिया गया है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

"इस जगत् में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर द्वारा आच्छादित है। अर्थात् उसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है और वही उसका स्वामी है। इसलिये मनुष्यों को उन सब सांसारिक पदार्थों का उपभोग त्याग और न्याय की भावना रखकर ही करना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी इस भौतिक संपत्ति का अधिकारी नहीं कहा जा सकता।"

संत विनोबा ने इसी शाश्वत सिद्धांत का प्रयोग भूदान-यज्ञ के लिए किया और लोगों को समझाया कि जमीन किसी एक व्यक्ति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं हो सकती। इसे न तो किसी ने बनाया और न कोई इसे अपने साथ लाया या ले जा सकता है। यह तो भगवान् की ही बनाई है और उसने इसे मनुष्य मात्र के उपयोग के लिये दे दिया है। अब यदि इस पर कोई एक आदमी अपना अधिकार जमाकर दूसरों को उसका उपयोग करने से रोके, तो यह स्पष्टतः ईश्वरीय आदेश के विपरीत है। इसी आधार पर उन्होंने जनता के सम्मुख नारा लगाया—

सबै भूमि गोपाल की।
नहीं किसी की मालिकी।।

इसका मतलब उन्होंने यही समझाया कि—"जितनी जमीन है, जितनी दौलत है, लक्ष्मी है—सब भगवान् की है, किसी आदमी की नहीं। इस पर किसी की मालिकी नहीं चल सकती। जो लोग कहते हैं कि फलाँ आदमी इतनी जमीन का मालिक है, वह गलती करते हैं। पृथ्वी तो हमारी माता है, हम उसकी सेवा कर सकते हैं, उसके मालिक होने की बात कैसी ?"

पर आज जमाना उलटी चाल चल रहा है। जिन लोगों ने हल, बैल, खुरपी, फावड़ा से कभी हाथ नहीं लगाया, वे ही अधिकांश जमीन के मालिक बने बैठे हैं। उन्होंने जमीन के चारों तरफ दीवार खड़ी करके या तार लगाकर उसके फाटक पर 'नो एडमिशन' (प्रवेशाधिकार नहीं) लिख दिया है। चाहे वे उस जमीन को खाली पड़े रहने दें या उस पर तंबाकू, अफीम, भाँग, गाँजा, चाय आदि कोई अनावश्यक और हानिकारक पदार्थ बोयें, पर दूसरे लोग जिनको वास्तव में अन्न पैदा करके अपना पेट भरने की आवश्यकता है, उसमें कदम नहीं रख सकते। यह स्थिति बड़ी अस्वाभाविक है और समस्त सामाजिक अशांति तथा तरह-तरह के अपराधों की जड़ है। मालूम होता है कि जब तक संपत्ति की मालिकी का रोग न मिटेगा अथवा स्वयं 'संपत्ति' का ही अंत न हो जाएगा, तब तक दुनिया में शांति, प्रेम, एकता न होगी।

विनोबा ने यही आदर्श सामने रखकर कार्य आरंभ किया है। वे सच्चे धर्म को मानने वाले हैं और चाहते हैं कि मनुष्य ईश्वरीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदेश का पालन करें—संसार के ईश्वर प्रदत्त पदार्थों पर अपना अधिकार जमाकर दूसरों को उनसे वंचित न करें। जब उन्होंने देश के लाखों व्यक्तियों और उनके स्त्री-बच्चों को निर्वाह के साधनों की कमी के कारण भूखे-नंगे रहता देखा, तो उनके हृदय को बड़ी पीड़ा हुई और उसी भावना से अंत में उनको 'भू-दान' आंदोलन की प्रेरणा मिली। "ईशावास्योपनिषद्" के सिद्धांतानुसार वे लोगों को ही उपदेश देते हैं कि तुम अपने पास उतनी ही सामग्री रखो, जिसकी तुमको वास्तव में आवश्यकता हो। आवश्यकता से अधिक पर अधिकार जमाने वाला और उसमें से दूसरे जरूरतमंदों को भाग न देने वाला 'गीता' के कथनानुसार 'चोर' है।

इस सिद्धांत की सच्चाई और महानता से कोई इनकार नहीं कर सकता। यही भारतवर्ष के प्राचीन धार्मिक आचार्यों का 'अपरिग्रह' व्रत है और यही वर्तमान युग के समाजवादी अथवा अराजकतावादी सिद्धांत का सार है। आज संसार में जो हलचल मची है, अशांति फैल रही है, सर्वनाश के लक्षण प्रकट हो रहे हैं, उन सबका कारण उपर्युक्त ईश्वरीय आदेश की अवहेलना ही है। इसी के कारण दुनिया गरीब और अमीर, शोषित और शोषक, साम्यवादी और पूँजीवादी दलों में बँटी हुई है और उनकी कलह मानव सभ्यता के लिये एक भयंकर खतरे का रूप धारण करती जाती है। मानवता की रक्षा के लिये इस समस्या को सुलझाना अनिवार्य है।

आस्तिक और नास्तिक—

जब विनोबा ईश्वर का नाम लेकर गरीबों की सहायता के लिये अपील करते हैं तो कुछ ऐसे व्यक्ति भी निकल आते हैं, जो अपने को अनीश्वरवादी कहते हैं और समझते हैं कि धर्म-ग्रंथों में जिन बातों को ईश्वरीय वाक्य बतलाया गया है, वे हम पर लागू नहीं होतीं। कांचीपुरम् (मद्रास) में किसी ने विनोबा से कहा कि—"यहाँ एक ऐसा समुदाय है, जो ईश्वर को नहीं मानता।" विनोबा कहने लगे कि—"इसमें कौन-सी नई बात हो गई ? ऐसे आदमी सारे देश में हैं, सारी दुनिया में हैं। हमें इसकी कोई परवाह नहीं, क्योंकि वे लोग भले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही भगवान् को न मानें, भगवान् तो उनको मानता है। बच्चा माँ को भूल जाए कोई बात नहीं, माँ बच्चे को भूल जाए तो बड़ी बात है।"

"जो लोग यह कहते हैं कि हम भगवान् को नहीं मानते, वे यह तो कहते ही हैं कि हम सज्जनता को मानते हैं, मानवता को मानते हैं। हमारे लिए इतना ही बहुत है। कोई आदमी मानवता को माने और भगवान् को न माने तो हमें चिंता नहीं, क्योंकि मानवता को मानना और ईश्वर को मानना हमारी निगाह में एक ही बात है। इसके साथ ही हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि जो लोग भगवान् को मानते हैं, उन सबका भी एक-सा विचार कहाँ है ? हम कहते हैं कि 'ईश्वर है भी और नहीं भी है और दोनों से परे भी है।' भगवान् को कोई शिवजी के रूप में मानता है, कोई विष्णुजी के रूप में, कोई देवी के रूप में। इसी तरह यदि वास्तव में उसे शून्य के रूप में मानते हैं तो हमें कोई एतराज नहीं। इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं।"

भगवान् पर विश्वास रखने से, उनका नाम लेकर आगे बढ़ने से अनेक दुनियादार सामान्य स्तर के व्यक्तियों का सहारा मिलता है, मार्ग में कठिनाई आने पर भी साहस बना रहता है और अनुचित कार्य से भय लगता है। पर यदि किसी की बुद्धि में ईश्वर का प्रचलित स्वरूप नहीं आता, कोई व्यक्ति यदि यह मानने से इनकार करता है कि भगवान् आकाश स्थित किसी लोक में सिंहासन पर बैठकर 'राजाओं' की तरह सबका न्याय और संसार की व्यवस्था करता है, तो इसमें कोई हानि नहीं। अगर किसी मनुष्य में इतना आत्म-विश्वास और नैतिक बल हो कि वह अपना मानव-कर्तव्य स्वयं ही अच्छी तरह पालन कर सकता है, समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का ठीक तरह निर्वाह कर सकता है, तो उसमें और आस्तिक में कोई भेद मानना आवश्यक नहीं है। भगवान् भी मनुष्य की ऊपरी बातों को, प्रथा और परंपराओं को नहीं, उसके हार्दिक भावों और सच्चाई को देखते हैं। इसी आधार पर विनोबा ने नास्तिकों को 'मानव-कर्तव्य' का पालन करने की प्रेरणा देते हुए 'आस्तिकों' को भी नहीं छोड़ा, क्योंकि वे उनकी कमजोरियों को खूब जानते हैं। उन्होंने कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"बहुत लोग मानते हैं कि चंदन लगाने से, माला फेरने से, राम का नाम लेने से, झांझ-मजीरा लेकर कीर्तन करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं, ये सब चीजें अच्छी हो सकती हैं, लेकिन भगवान् खुश होते हैं—ईमानदारी से, सच्चाई से, दया से, प्रेम से, सेवा से। ये गुण हैं तो दूसरी चीजें भी अच्छी हो सकती हैं, ये नहीं तो कुछ नहीं।"

भगवान् की सबसे पहली आज्ञा यही है कि मनुष्य को यह अद्‌भुत कर्मेंद्रियों और ज्ञानेंद्रियों से युक्त मनुष्य शरीर और भले-बुरे को समझ सकने का विवेक दिया गया है, उसका उपयोग सदैव अपने और दूसरों के कल्याण के लिए किया जाए। 'आस्तिकता' का अर्थ इतना ही नहीं है कि प्रातःकाल उठकर कुछ भजन-पूजन कर लिया जाए या मंदिर जाकर भगवान् की मूर्ति का दर्शन कर लिया जाए। आवश्यकता तो यह है कि हम दिन भर अपने समस्त कामों में भगवान् के आदेश का ध्यान रखें, उसके विपरीत आचरण न करें। विनोबा कहते हैं—

"किसान खेत में काम तो करता है, लेकिन खेत जोतते हुए पड़ोसी की जमीन में कुछ हाथ बढ़ा देता है। कहता है कि दूसरे के खेत में घास ही है, उसमें क्या नुकसान है ? यह तो धर्म नहीं, अधर्म है। उस किसान से भगवान् खुश कैसे होगा ? मजदूर-मालिक के खेत में काम करता है। नाम तो वह काम का लेता है, पर बीच-बीच में आलस करता है। जब बैल की तरह उस पर भी देख-रेख रखी जाती है, तब तो वह काम करता है, नहीं तो बैठ जाता है। उसे आठ घंटे काम करना चाहिए, लेकिन वह मुश्किल से चार घंटे काम करता है। कहता है—"यह तो मालिक का काम है, अपना इसमें क्या बिगड़ता है ?" यह भी धर्म नहीं है और न इससे भगवान् खुश हो सकता है। इसी तरह मालिक भी मजदूर से दिन भर काम लेकर उसे पूरी मजदूरी देने में झूठे बहाने निकालता है और उसके कुछ पैसे काट लेता है। यह भी भगवान् का मार्ग—धर्म नहीं है।"

"हमारे पास जो धन-दौलत है, शक्ति है, उसका उपयोग हम अपने साथ ही अपने पड़ोसियों के हित की दृष्टि से भी करें, तो यह भगवान् की भक्ति कही जायेगी। हम सब एक ही ईश्वर की संतान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, इसलिए सब मिलकर काम करें, मिल-बाँटकर खाएँ, एक होकर भगवान् का नाम लें तो ईश्वर अवश्य प्रसन्न होगा। हम ईमानदारी से अपना काम करें, पूरा काम करें, तो भगवान् खुश होगा। हम शराब न पियें, व्यसन न पालें, झगड़ा न करें, तो भगवान् खुश होगा। जो लोग अपने को 'आस्तिक' कहते हैं, भगवान् को मानते हैं, धर्म को मानते हैं, उनको चाहिए कि ऐसे ही काम करें, जिससे भगवान् उनसे खुश रहे।"

आस्तिक हो या नास्तिक, ईश्वर के निकट पहुँचने का अधिकारी वही होगा, जो स्वार्थ को कम करके परमार्थ का व्यवहार भी करेगा। इस समय संसार में सबसे हानिकारक प्रवृत्ति समाजोपयोगी वस्तुओं पर अपना अधिकार जमा कर उनका ज्यादा-से-ज्यादा हिस्सा अपने लिए रख लेने, ताले में बंद कर देने की है। इसी से लोगों में तरह-तरह के झगड़े और दोष-दुर्गुण फैलते हैं। इसलिए विनोबा यही कहते हैं कि तुम चाहे भगवान् को मानो या न मानो, पर 'मालकियत' सबको छोड़नी पड़ेगी। 'स्वामी' बनने की हविस छोड़कर सबको अपना न्याययुक्त भाग प्राप्त करने में सहायता दो, तो तुम 'भगवान् के भक्त' ही माने जाओगे, चाहे मुँह से उसका नाम लो या न लो।

दान नहीं गरीबों का हक—

विनोबा ने भूमिहीनों के लिए पचास लाख एकड़ के लगभग जमीन प्राप्त की है, पर उनका कहना था—"मैं जमीन माँगता नहीं, मैं भीख नहीं माँगता। मैं तो गरीबों का हक माँगकर उनको दे देना चाहता हूँ।" वास्तव में माँगने में, दान ग्रहण करने में हीनता की भावना अवश्य ही रहती है और उससे मनुष्य की मानवता को धक्का लगता है। एक पौराणिक-कथा है कि जब ब्रह्माजी ने महर्षि वशिष्ठ से सूर्यवंशी राजाओं को पुरोहित बनने को कहा, तो वे बड़े दुःखी हुए और कहा कि 'प्रतिग्रह' या 'दान' ग्रहण करना आत्मबल और सम्मान को नष्ट करने वाला है, इसलिए मैं पुरोहित के धंधे को बहुत नापसंद करता हूँ। अंत में ब्रह्माजी ने उनको सूर्यवंश में भगवान् के 'अवतार'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होने का आश्वासन दिया, तब कहीं जाकर वे बड़े संकोच के साथ इस कार्य के लिए तैयार हुए।

विनोबा भी इसी विचार के थे, इसलिए वे इस बड़ी उम्र में भी बिना कड़ी मेहनत किये, अपने निर्वाह की सामग्री नहीं लेते। गरीबों की सामाजिक समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने जो 'भूदान' प्रचलित किया—उसमें भी उन्होंने यही भाव रखा कि मनुष्य जमीन पर परिश्रम करके अपने पसीने की कमाई खाए। एक प्रवचन सभा में जब उन्होंने 'भूमि-दान' की अपील की, तो एक व्यक्ति उठकर उनके पास आया और उसके जेब में जितना रुपया-पैसा था सब निकालकर सामने रख दिया और कहा—"बाबा, आप यह रुपया गरीबों को बाँट दीजिये।"

विनोबा—"भाई, मैं गरीबों को लज्जित करना नहीं चाहता। इस 'रुपया' ने ही तो सारी खराबी फैलाई है। गरीबों को रुपया बाँटने से काम नहीं चलेगा। अगर आपको गरीबों से सहानुभूति होती है, तो आप इसी रुपया से थोड़ी जमीन खरीदकर गरीबों को दे डालिये। उस पर वे मेहनत करेंगे और अपना पसीना बहाकर फसल पैदा करेंगे। उसमें उन्हें शान मालूम होगी। पैसा बाँटने से तो उनकी शान में बट्टा लगेगा।"

एक मुसलमान भाई से विनोबा की भेंट हुई तो उनसे भी कहा—"आप गरीबों के लिए अपनी जमीन में से हिस्सा दीजिये।"

उन्होंने जबाव दिया—"कितना हिस्सा दूँ ?"

विनोबा—"छठा हिस्सा दीजिये।"

"छठा हिस्सा ही क्यों ? उसके पीछे क्या उसूल है ?"

विनोबा—"घर में अक्सर पाँच भाई होते हैं। मैं छठा भाई बनकर हिस्सा माँगता हूँ।"

उन सज्जन ने कहा—आपका कहना बिल्कुल ठीक है। हम लोग पाँच भाई हैं। लेकिन हमारे यहाँ (मुसलमानों में) बहनों का भी हक माना गया है। मेरी दो बहिनें हैं।"

विनोबा—"अगर आप सात भाई-बहन हैं, तो मैं आठवाँ हुआ। मुझे आप आठवाँ भाग दें।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक अपनी जमीन का आठवाँ भाग 'भूदान' में दे दिया।

विनोबा जब तैलंगाना के कम्युनिस्टों से मिले तो उनको समझाया कि—"तुम लोग रात में क्यों लूटते हो ? मेरे साथ आओ तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि दिन-दहाड़े किस तरह लूटा जाता है ?" और सचमुच उन्होंने दो-चार दिन में ही अपनी बात को यथार्थ करके दिखा दिया—

एक दिन प्रवचन में एक भाई ने उठकर कहा—"मैं एक एकड़ जमीन भू-दान के लिये देना चाहता हूँ।"

विनोबा—आपके पास कुल कितनी जमीन है ?

"लगभग तीन सौ एकड़ होगी।"

विनोबा—"फिर भी मुझे केवल एक ही एकड़ क्यों देना चाहते हैं ? इतना कम देने से आपकी बदनामी होगी। मैं गरीबों और अमीरों दोनों की इज्जत बढ़ाना चाहता हूँ। अगर मुझे कोई आश्रम बनाना होता तो मैं आपसे थोड़ी जमीन ही ले लेता। लेकिन मैं तो गरीबों का, दरिद्र नारायण का प्रतिनिधि हूँ। मुझे तो उनका हक चाहिए।"

इस प्रकार समझाने से वे एक के बजाय तीस एकड़ जमीन दे गये।

इसी प्रकार बिहार की एक चीनी मिल का योरोपियन मैनेजर मिलने को आया तो उसने कहा—"बाबा ! मेरा एक फार्म है। उसकी पचास एकड़ जमीन मैं भूदान में देता हूँ।"

विनोबा—"आपके फार्म में कुल कितनी जमीन है ?"

मैनेजर—"फार्म में ६०० एकड़ जमीन है।"

विनोबा—"तो पचास एकड़ मुझे और चाहिए। जमीन का छठा हिस्सा मैं चाहता हूँ।"

मैनेजर—"कोई बात नहीं, आप इसे मेरी पहली किश्त मान लीजिये।"

बाबा ने उनकी बात स्वीकार की। साथ ही यह 'प्रार्थना' भी की कि आप अपनी मिल और फार्म में मजदूरों को भी साझीदार मानिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उनके साथ समानता का व्यवहार कीजिए। इसी से आपकी और उनकी उचित रूप में उन्नति हो सकेगी।

इस तरह लगातार १४-१५ वर्ष तक समस्त देश का पैदल भ्रमण करके विनोबा ने लाखों गरीबों की जीवन की व्यवस्था करने के साथ ही भारतीय जनता की दशा का निरीक्षण किया और उसकी समस्या को समझा। उन्होंने देखा कि जहाँ गरीबों को साधनों की कमी और उच्च वर्गों की असहानुभूति के कारण उनको पतित अवस्था में रहना पड़ता है, वहाँ उनकी अपनी त्रुटियाँ भी उनको दरिद्रता और निर्बलता की दशा में ग्रस्त रखने की जिम्मेदार हैं। इसलिए उन्होंने गरीबों को भूमि दिलाने के साथ ही उनसे दुर्व्यसनों के त्याग, मितव्ययिता, सहयोगी प्रवृत्तियाँ, अशिक्षा उन्मूलन आदि की प्रतिज्ञायें भी कराईं। उन्होंने उनको समझाया कि उनकी आपस की फूट, मुकदमेबाजी और शराबखोरी की बजह से ही उनको उन्नति का अवसर नहीं मिलता और उनको सीमित साधन भी हानिकारक प्रवृत्तियों में बरबाद हो जाते हैं। इसलिए उनको यदि 'भूदान' के द्वारा लाभ उठाना है तो उनको अपना सुधार भी करना होगा। दोष और दुर्गुणों को त्यागकर ही वे सुखी-जीवन के अधिकारी बन सकेंगे।

कन्याकुमारी में संकल्प—

इस भारतवर्ष के विविध प्रदेशों की पैदल-यात्रा करते हुए विनोबा देश के अंतिम छोर 'कन्याकुमारी' तक जा पहुँचे। यह वही स्थान था, जहाँ भारत-भूमि का अंतिम पत्थर हिंद महासागर के जल का स्पर्श करता है और जहाँ एक चट्टान पर बैठकर विनोबा के जन्म से भी पाँच वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानंद ने देशोद्धार की प्रतिज्ञा की थी। उस समय भारतवासी सोये पड़े थे और विदेशियों की विद्या तथा यांत्रिक सभ्यता की चमक-दमक से प्रभावित होकर अपनी ऋषि-प्रणीत संस्कृति से दूर हटते जाते थे। यहाँ के आर्थिक साधनों का शोषण भी विदेशी बड़ी मात्रा में कर चुके थे और सर्वत्र खोखलापन ही नजर आता था। यह देखकर विवेकानंद अमेरिका और योरोप पहुँचे और अपनी योग्यता एवं आत्मशक्ति से विदेशों से साधन प्राप्त करके उन्होंने भारत-उद्धार का कार्य आरंभ किया। फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देश में जागृति हो जाने पर यहाँ वालों ने ही उनके संकल्प को पूरा कर दिखाया।

इसलिए जब विनोबा उस 'अंतिम पत्थर' पर पहुँचे, तो विवेकानंद की आत्मा ने इनके भीतर एक नई भाव-प्रेरणा उत्पन्न की। वैसे तो 'कन्याकुमारी' एक तीर्थ स्थान है। 'रामेश्वर' के यात्रियों में से अनेक वहाँ तक जाकर दक्षिण दिशा में भारत की अंतिम सीमा के दर्शन कर आते हैं। पर उनको वहाँ 'कन्याकुमारी' के साधारण मंदिर और समुद्र जल से घिरी हुई छोटी-बड़ी चट्टानों के सिवाय कुछ दिखाई नहीं पड़ता। स्वामी विवेकानंद का संदेश उनको सुनाई नहीं पड़ता, उनमें से अधिकांश तो उनके नाम से भी अनजान होते हैं, पर जब भारतमाता के महान् सुपुत्र और संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष गांधी के उत्तराधिकारी संत विनोबा वहाँ पहुँचे, तो विवेकानंद की आत्मा को परम संतोष हुआ और दोनों आत्माएँ प्रेमपूर्वक मिलीं।

विवेकानंद की आत्मा ने कहा—"मैंने सत्तर वर्ष पूर्व इस स्थान पर जो प्रतिज्ञा की थी और फिर आगामी दस वर्षों में जो नव-निर्माण का श्री गणेश किया था, वह लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी के नेतृत्व में दो सीढ़ियाँ और पार कर चुका है। अब तीसरी सीढ़ी तुम्हारे सामने है। विदेशियों के शासन से छुटकारा पाकर देश बाह्य रूप में स्वाधीन अवश्य बन गया है, पर सच्ची स्वाधीनता अब भी दूर है। भारतीय समाज के दोष-दुर्गुण अब भी मिटे नहीं हैं, वरन् 'भौतिकता' की वृद्धि के कारण उसमें नई-नई शाखाएँ फूट रही हैं। इस समय यह तुम्हारा कर्तव्य है कि भारतवासियों की आर्थिक समस्याओं को सुलझाते हुए उनको सच्चा ईश्वर-भक्त भी बनाओ। यह उद्देश्य केवल मंदिर में जाकर भगवान् का दर्शन कर लेने या नाम जप लेने से पूरा नहीं होगा। इन कामों के साथ नैतिकता पर चलने और चरित्र को ऊँचा बनाने की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है।"

विनोबा ने उस महापुरुष की जीवन्मुक्त आत्मा का संदेश अच्छी तरह सुना, उसके आशय को हृदयंगम किया और उसी समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ में समुद्र का जल लेकर तथा सामने उगते हुए सूर्य-देवता को साक्षी बनाकर प्रतिज्ञा की—

"जब तक भारतवर्ष में ग्राम-राज्य की स्थापना नहीं होगी तब तक मेरी वह यात्रा जारी रहेगी।"

विनोबा जानते थे कि असली भारतवर्ष अब भी गाँव में ही बसा है। अब भी यह देश कृषि-प्रधान ही है। सौ में से ७५-८० व्यक्ति गाँव में ही रहते हैं और नगर निवासियों में से भी एक बड़ा भाग ग्रामीणों का ही होता है। इसलिए जब तक भारत के ग्राम संगठित और स्वावलंबी न होंगे, तब तक उनकी समस्याएँ सुलझ नहीं सकेंगी और न वे पुनः भारत की आध्यात्मिक संस्कृति को उच्च लक्ष्य की तरफ अग्रसर होने के योग्य हो सकेंगे। इसलिये उन्होंने यही निश्चय किया कि ग्राम संगठन को सुदृढ़ बनाया जाए, जिससे वहाँ के निवासी अपनी समस्याओं को स्वयं हल करके, स्वावलंबी बनकर कल्याण-मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

यह संकल्प करके विनोबा कन्याकुमारी से चले और पैदल ही केरल, महाराष्ट्र, राजस्थान और पंजाब होकर भारत की उत्तरी सीमा के 'पत्थर पीर पंजाल' तक जा पहुँचे। सुनने में तो यह साधारण-सी बात हो गई। पर यह दो हजार मील के फासले की यात्रा, जिसमें तेज से तेज रेलगाड़ी को भी तीन दिन और तीन रात से भी ज्यादा समय लग जाता है, ६५ वर्ष की अवस्था में, विनोबा ने कैसे पूरी की और इस बीच में लाखों बीघा भूमि माँगकर गरीबों को दान कर दी, वह कोई साधारण बात नहीं है। एक लँगोटी लगाने वाला ऐसा काम कर दिखावे, तो इसे ईश्वर का प्रसाद ही कह सकते हैं।

डाकुओं का हृदय-परिवर्तन—

पीर पंजाल को पार करके विनोबा ने कश्मीर का भ्रमण किया। वहीं के मुसलमान निवासियों ने भी उनका अपने एक 'गुरु' (पीर) की तरह ही स्वागत-सत्कार किया। वहाँ से चलते समय उनको आगरा के प्रसिद्ध डाकू मानसिंह के पुत्र तहसीलदारसिंह का पत्र मिला, जिसमें लिखा था—"बाबा ! मुझे फाँसी की सजा मिली है। मरने से पहले मैं आपके दर्शन कर लेना चाहता हूँ।" अन्य लोगों ने भी उनसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा कि आप इस समस्या को प्रेम से सुलझाने का प्रयत्न करें। हिंसा से तो यह गत दस-पंद्रह वर्षों में सुधरी नहीं। पुलिस जितने डाकुओं को मारती या पकड़ती है, उतने ही फिर नये पैदा हो जाते हैं।

इन सब बातों को सुनकर विनोबा ने इन डाकुओं को अपना जीवन-मार्ग बदलने का संदेश देने का निश्चय किया। ८ मई को वे आगरा के निकट चंबल के बेहड़ों में पहुँच गये, जहाँ डाकुओं के क्षेत्र में उनके मुख्य सहकारी जनरल यदुनाथ सिंह थे। वे डाकुओं के पास जाकर विनोबा का यह संदेश पहुँचाते रहे कि "डाका डालना किसी को मारना-पीटना, सताना गलत है। जो लोग अभी तक ऐसा गलत काम करते रहे हैं, वे अब इसे छोड़ दें और अपनी जिंदगी सुधार लें।" ८ जून तक एक महीने का समय उन्होंने इस काम में लगाया।

नतीजा यह हुआ कि लुक्का, लच्छी, भगवानसिंह, तेजसिंह, कन्हई जैसे २० प्रसिद्ध डाकुओं ने, जिनको मारने या पकड़ने के लिए सरकार ने बड़े-बड़े इनाम घोषित कर रखे थे। विनोबा के आगे अपने हथियार लाकर रख दिए और प्रतिज्ञा की कि अब ऐसा काम न करेंगे।

एक डाकू ने बंबई में अखबार में पढ़ा कि बाबा विनोबा चंबल के बेहड़ों में घूम-घूम कर 'भूल' में पड़े भाइयों को समझा रहे हैं, तो उसे अपनी अंतरात्मा से यह प्रेरणा हुई कि मैं भी बाबा के चरणों में पहुँचकर आत्म-समर्पण कर दूँ। उससे भेंट होने पर विनोबा ने अपनी प्रवचन सभा में कहा—

"आज जो भाई आये हैं, वे परमेश्वर के भेजे हुए ही आये हैं। हमारा कोई साथी उनके पास नहीं पहुँचा था। ईश्वर ने प्रेरणा दी और वे यहाँ चले आये। ढाई हजार वर्षों से हम भगवान् बुद्ध और डाकू अंगुलिमाल की कहानी सुनते आ रहे हैं। आज कलियुग माना जा रहा है, पर इस कलियुग में भी ऐसी कहानियाँ बन रही हैं, यह ईश्वर की कृपा है।"

इस प्रकार दुर्धर्ष और कठोर हृदय—डाकुओं को हानिकारक समाज-विरोधी मार्ग से हटाकर समाज-सेवा के कर्म में प्रवृत्त कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देना एक प्रकार का चमत्कार ही माना जायेगा। जो दुस्साहसी व्यक्ति पुलिस और फौज वालों की रायफलों और मशीनगनों से नहीं डरते और डटकर उनका मुकाबला करते हैं, वे एक निहत्थे बुड्ढे आदमी के सामने नतमस्तक हो जाएँ, तो यह दैवी शक्ति का ही एक कार्य समझा जा सकता है। जो लोग अध्यात्म-शक्ति को केवल एक कल्पना की बात मानते हैं और केवल धन या शस्त्र की शक्ति को ही कारगर बतलाते हैं, वे इस घटना को देखकर अपनी भूल को सुधार सकते हैं। धन और शस्त्र की शक्ति तो प्रत्यक्ष ही दिखाई पड़ती है, पर अध्यात्म की शक्ति अप्रत्यक्ष होते हुए भी उन दोनों से बढ़कर है, यह महात्मा गांधी और संत विनोबा जैसी दैवी विभूतियों की कार्य प्रणाली से सत्य सिद्ध हो जाता है। साथ ही यह विदित होता है कि यदि धन तथा शस्त्र की शक्तियाँ अध्यात्म के नियंत्रण में रहें, तभी वे दुनिया के लिए हितकारी हो सकती हैं।

पाकिस्तान की यात्रा द्वारा भी विनोबा ने इस तथ्य की पुष्टि की। वहाँ के शासक कैसे कट्टर संप्रदायवादी और हिंदुओं से द्वेष रखने वाले हैं, यह सभी को मालूम है। पर जब विनोबा आसाम की यात्रा करके वापस लौटे, तो उन्होंने पाकिस्तान में होकर जाने का विचार किया। पाकिस्तान वालों ने इसे स्वीकार कर लिया और वहाँ पहुँचकर भी विनोबा ने वहाँ की जनता को प्रेम और करुणा का संदेश दिया। उन्होंने कहा—"मुझे तो यहाँ कोई अंतर नहीं जान पड़ता। जैसा हिंदुस्तान वैसा पाकिस्तान। वही जमीन, वही पेड़-पौधे, वही लोग, वही जनता। सब कुछ तो एक है।"

पाकिस्तान में भी विनोबा का धूम-धाम से स्वागत-सत्कार किया गया और जमीन माँगने पर १७५ बीघा जमीन भी भेंट की गई, जो उसी समय भूमिहीनों में बाँट दी गई।

चौदह वर्ष (सन् १९५१ से १९६४ तक) लगभग ४३ लाख मील की पैदल यात्रा करके विनोबा ने जब पुनः अपने आश्रम सेवाग्राम में प्रवेश किया तो उस समय तक उनको ४२३६८२७ एकड़ जमीन भूदान में मिली और ७५६० ग्राम दान में मिले।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांति और क्रांति के उपासक—

इस प्रकार के चमत्कार करने वाले विनोबा बचपन से ही सत्य, न्याय और त्याग का जीवन व्यतीत करने के इच्छुक थे। उनकी माँ रुक्मणीबाई बड़ी भक्त और धर्मपरायण महिला थीं और इनको आरंभिक अवस्था से ही सच्चरिता तथा सदाशयता की प्रेरणा देती रहती थीं। उस छुआछूत के जमाने में भी वह हरिजनों को भी मनुष्य मानकर कहा करतीं कि—"डोम, महार, चमार नीच नहीं हैं। यदि ये नीच होते, तो इनमें 'विनोबा' जैसे संत कहाँ उत्पन्न होते ?" अगर पड़ोस की कोई स्त्री हो जाती तो रुक्मिणी बहन उसका सेवा करती, उसके यहाँ रसोई कर आती। स्त्री होने पर भी समाज-सुधार के संबंध में उसके विचार बड़े उदार थे।

एक तो विनोबा प्रकृति से ही संयमी, त्यागी और तपस्वी मनोवृत्ति के थे, फिर उनको परिवार वाले भी इसी के अनुकूल मिल गये। बस, बचपन से ही उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया और उसके अनुसार कठोर जीवन बिताने लगे। माँ उनके लिए गद्दा बिछाती, तो वे सोते समय उसे उठाकर अलग रख देते और कंबल बिछाकर ही सो जाते। वे नंगे पैर रहते और जाड़ों में भी ठंडे पानी से नहाते, जब ठंड ज्यादा होती तो इनकी कम उम्र का खयाल करके माँ पानी गरम कर देती, तो ये कहते—"यदि स्नान करूँगा तो ठंडे जल से ही करूँगा, अन्यथा करूँगा ही नहीं।"

विनोबा जब हाईस्कूल में पढ़ते थे, उन्हीं दिनों घर से समाचार आया कि—"तुम्हारे विवाह के लिए लड़की ठीक की जा रही है।" विनोबा ने माँ को लिख दिया कि—"माँ, तुझे मेरी जरूरत हो, तो विवाह की बात कभी न उठाना। यदि जरूरत न हो तो बात दूसरी है। मैं एक बार ब्रह्मचर्य-व्रत धारण कर चुका हूँ, अब उसे कभी छोड़ा नहीं जा सकता।

उन दिनों विनोबा का ध्यान दो तरफ लगा था। एक तरफ वे निजी तौर पर संस्कृत का अध्ययन कर रहे थे और भारत के प्राचीन आध्यात्मिक साहित्य की झाँकी ले रहे थे। वैदिक-कालीन ऋषि-मुनियों ने जिस ब्रह्म-ज्ञान की चर्चा की है, उसी को प्राप्त करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए उनका मन उत्सुक हो रहा था। वे अपने मन में कल्पना करते थे कि मैं हिमालय में भगवती भागीरथी के तट पर किसी शिलाखंड पर बैठा हुआ उपनिषद् और गीता के तत्त्वों का आंतरिक रूप से अध्ययन और मनन कर रहा हूँ।

दूसरी तरफ उस समय वे समाचार पत्रों में बंगाल के नेताओं तथा क्रांतिकारियों के देशभक्ति पूर्ण उद्‌गार और कारनामों की बातें पढ़ते थे। इन लोगों ने किस प्रकार अपना सर्वस्व ही नहीं, प्राण तक मातृभूमि की वेदी पर अर्पण कर दिये, इसको जानकर इनके मन में भी वैसा ही त्याग करने की भावना उत्पन्न होने लगी। इसलिए सन् १९१६ में जब वे इंटर की परीक्षा देने को बंबई जाने वाले थे, तो बिना घर वालों से कुछ कहे-सुने काशी चले गये। इनकी इच्छा थी कि कुछ समय तक वहाँ संस्कृत का अच्छी तरह अभ्यास करके 'ब्रह्म' की खोज में लगा जाए। उस समय की अपनी मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने एक बार स्वयं कहा था—

"बचपन से मेरे मन में बंगाल के लिए बड़ा भारी खिंचाव था। राम मोहन, रवींद्रनाथ, रामकृष्ण, विवेकानंद, अरविंद—मेरे मंत्र देवता थे। मन में बड़ी साध थी कि कभी बंगाल जाऊँगा। सन् १९१६ में घर को छोड़कर ब्रह्म की खोज में बाहर निकला। सोचा था कि वहाँ से हिमालय जाऊँगा। बंगाल घूम आने की बात भी मन में छिपी पड़ी थी। दैवयोग से दोनों में से एक भी उद्‌देश्य पूरा न कर पाया। चला गया गांधी जी के पास और वहाँ मेरी दोनों साधें पूरी हो गईं। बापू में मुझे मिल गई हिमालय की शांति और बंगाल की क्रांति।"

इसमें संदेह नहीं कि जिसने अपने भीतर शांति और क्रांति दोनों का समन्वय कर लिया है, वही सच्चा आत्मज्ञानी और त्यागी-तपस्वी है। शरीर पर भस्म रमाने वाले अथवा धूनि तापने वाले साधुओं की तो कमी नहीं, वे इतने हैं कि आजकल कुछ अज्ञानी जनों को छोड़कर कोई उनकी पूछ भी नहीं करता, पर जिसने वास्तव में अपनी आत्मा को कुछ समझ लिया है—पहचाना है, वही चाहे जब हिमालय में रहकर शांति प्राप्त कर सकता है और जरूरत हो तो बंगाल की-सी क्रांति करके अपने जीवन को सार्थक बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है। सबसे अधिक महत्त्व की चीज है। हृदय की सच्चाई और परमार्थ-वृत्ति। केवल भोजन, वस्त्र, परिवार की चिंता में अपने समस्त जीवन को लगा देना बहुत सामान्य बात है। घटिया से घटिया मनुष्य और बहुत से पशु भी इस उद्देश्य को पूरा कर लेते हैं। पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ऐसा व्यक्ति न तो आत्मा को जान सकता है और न ईश्वर को। वह चाहे मुँह से भगवान् का नाम लेता रहे, पूजा-पाठ भी करता रहे, पर वह रहेगा नितांत सामान्य स्तर का ही। जिसने आत्मतत्त्व को कुछ भी समझ लिया है, हृदय में उसका अनुभव कर लिया है, वह अवश्य ही लोकसेवा के मार्ग को ग्रहण करेगा और अपनी परिस्थिति के अनुसार जिस प्रकार और जितना बन पड़ेगा, अपनी शक्ति को दूसरों के हित में लगायेगा।

गांधी जी और विनोबा—

विनोबा आरंभ से इसी पथ के पथिक हैं। उन्होंने विद्यार्थी अवस्था में ही, जबकि उनके पिता श्री नरहर पंत उनको आई० सी० एस०, या बैरिस्टर बनाने के स्वप्न देख रहे थे, निश्चय कर लिया था कि वे कोई नौकरी नहीं करेंगे। इसलिए उन्होंने अपने समस्त शिक्षा संबंधी सर्टीफिकेट (प्रमाण-पत्र) अपने हाथ से अग्निदेव को अर्पण कर दिये थे। इसके पश्चात् जब उन्होंने काशी में हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन उत्सव पर गांधी जी के विचार सुने, तो उनको जान पड़ा कि मैं जिस मार्ग को खोज रहा हूँ, वह इन्हीं के पास हैं। वे काशी से चलकर अहमदाबाद में गांधी जी के चोचरब गाँव वाले सत्याग्रह-आश्रम में कुछ दिन रहे। यह साबरमती आश्रम बनने से भी पहले की बात है। एकाध-सप्ताह बाद गांधी जी ने उनसे कहा—"क्यों आश्रम का जीवन पसंद आया ? यहाँ रहना तुमको अच्छा लगता हो और अपना जीवन सेवा में लगाना चाहते हो तो तुम आश्रम में रह जाओ। तुम्हारे यहाँ रहने से मुझे बड़ी खुशी होगी।"

विनोबा ने इन बातों पर अच्छी तरह विचार करके देखा तो उनको प्रतीत हुआ कि—"इस प्रकार जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। इसमें सादगी है, सच्चाई है, ईमानदारी है, श्रम है, त्याग है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा है, देश-भक्ति है। इसके सिवा मुझे और क्या चाहिए ?'' यह समझकर उन्होंने गांधी जी से कह दिया कि मुझे यहाँ रहना पसंद है।

पर उसी समय उनके सामने एक और अवसर भी उपस्थित हो गया। वे काशी संस्कृत भाषा और अध्यात्मशास्त्र का अभ्यास करने गये थे। पर वहाँ दो महीने भी न रह पाये कि गांधी जी का आकर्षण उनको आश्रम में खींच लाया। पर तब तक उनकी अध्ययन की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। इसलिए जब उनको मालूम हुआ कि 'वाई' कस्बे में श्री नारायण शास्त्री मराठे नामक विद्वान् विद्यार्थियों को वेदांत और अन्य शास्त्र पढ़ाते हैं, तो उनको कुछ समय वहाँ रहकर अपना शास्त्राभ्यास दृढ़ कर लेने की इच्छा हुई। वे गांधीजी से कुछ दिनों की छुट्टी माँगकर बाई पहुँचे और कुछ महीनों में उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र और उस पर शंकर भाष्य, मनुस्मृति, पातंजल, योगदर्शन का विधिवत् अध्ययन कर लिया।

पर इस कार्य में उन्होंने जितना सोचा था, उससे ज्यादा समय लग गया, तो उन्होंने महात्मा गांधी को एक पत्र में लिखा—''एक साल पहले तबियत ठीक न होने से मैं आश्रम के बाहर गया था। सोचा था दो-तीन महीना 'वाई' में रहकर लौट आऊँगा। पर इतना अर्सा बीत गया, फिर भी मेरा कोई ठिकाना नहीं। इसलिये यदि वहाँ किसी को ऐसी शंका हुई हो कि मैं आश्रम में लौटूँगा या नहीं अथवा मैं जिंदा भी हूँ या नहीं, तो यह स्वाभाविक ही है और इसमें सब दोष मेरा ही है, क्योंकि समय पर पत्र न लिखने की मेरी आदत है। पर अब में इतना लिख देना चाहता हूँ कि आश्रम ने मेरे दिल में खास स्थान बना लिया है। इतना ही नहीं, बल्कि मेरा जन्म ही आश्रम के लिये है, ऐसी मेरी श्रद्धा बन गई है। अधिक क्या कहूँ, जब भी सपने आते हैं, तभी मन में एक यही विचार आता है कि ईश्वर मुझसे कोई सेवा लेगा। इसलिए यहाँ भी आश्रम के नियमों के अनुसार अपना आचरण रखता हूँ। अर्थात् मैं आश्रम का ही हूँ और आश्रम ही मेरा साध्य है।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाई में रहकर अध्ययन करते हुए भी वे दूसरों को शिक्षा देकर, हिंदी प्रचार करके, चक्की पीसकर, पुस्तकालय स्थापित करके कुछ न कुछ सेवा कार्य करते ही रहे। आश्रम के व्रतों में से अस्वाद-व्रत, अपरिग्रह, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य का उन्होंने अधिक से अधिक पालन किया। उनका पूरा हाल जानकर और आश्रम के प्रति उनकी अविचल श्रद्धा को देखकर गांधी जी बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने विनोबा को पत्रोत्तर में लिखा—

"तुम्हें क्या कहकर चिट्ठी लिखूँ, यह मैं नहीं समझ पाता। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारा चरित्र मुझे मोह में डुबो देता है। तुम्हारी परीक्षा करना मेरे बस की बात नहीं है। तुमने जो अपनी परीक्षा की है, उसे मैं स्वीकार करता हूँ और तुम्हारे लिये पिता का स्थान लेता हूँ। मैं जानता हूँ कि सच्चा पिता अपने से भी ज्यादा चरित्रवान् पुत्र पैदा करना चाहता है। सच्चा पुत्र भी वही है कि पिता ने जो कुछ किया है, उसमें बढ़ती करे। तुमने ऐसा ही किया है और इसलिये तुमने मुझे जो पिता का पद दिया है, उसे मैं तुम्हारी प्रेम की भेंट के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं भी उस पद के लायक बनने की कोशिश करूँगा।"

जिस व्यक्ति के चरित्र की उच्चता और ध्येय के प्रति अटूट श्रद्धा की प्रशंसा करने में गांधी जी को संकोच जान पड़े, निस्संदेह उसकी महत्ता का निर्णय कर सकना सहज काम नहीं है। यह तो आज से पचासी वर्ष पूर्व सन् १६१८ की बातें थीं। पर आज हम विनोबा के चरित्र पर दृष्टि डालने से स्पष्ट कह सकते हैं कि उन्होंने गांधी जी से जो कुछ कहा और गांधी जी ने उनसे जिस प्रकार की आशाएँ रखीं; वे सब शत-प्रतिशत ही नहीं, वरन् उससे भी कई गुने रूप में चरितार्थ हो चुकी हैं। विनोबा न होते, तो न मालूम इस भ्रष्टाचार-युग में, जिसमें कांग्रेस के बड़े-बड़े स्तंभ भी डगमगा गये, गांधी जी के सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांतों की लाज कौन रखता ? अब जब बड़े-बड़े नाम वाले नेता, पदवी और धन के पीछे ही नहीं पड़े हैं, वरन् उन्होंने चरित्र और सच्चाई की भी चिंता छोड़ दी है, तब एक विनोबा ने ही उस लँगोटीधारी 'युगपुरुष' के झंडे को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊँचा रखा है और अपने आत्मदान से उसमें इतना बल भर दिया कि आज सच्चे गुण-ग्राहकों के मुख से यही निकल रहा है कि 'गांधी को सराहों कि सराहों विनोबा भूदानी को।'

विनोबा की समन्वयात्मक प्रवृत्ति—

महात्मा जी ने विनोबा को जो इतना प्रेम और सम्मान दिया वह निराधार नहीं था। लोकहित के कार्यों के लिये गांधी जी की त्याग और तपस्या संसार में प्रसिद्ध है, पर उस स्थिति को उन्होंने बहुत समय में तथा बड़ा प्रयत्न करके प्राप्त किया था, पर वे सब प्रवृत्तियाँ विनोबा में जन्मजात थीं, यह भी कहना अत्युक्ति नहीं है। खाने-पीने का स्वाद उनको बाल्यावस्था से ही नहीं था। कभी उनकी माँ दाल में नमक डालना भूल जाती अथवा अन्यमनस्क हो जाने से दो बार डाल देती, तो भी विनोबा को कुछ पता नहीं चलता और वे उसे बड़ी रुचि से खा लेते। जब अन्य भाई खाने को बैठते तो उसका पता लगता। इस तरह अस्वाद-व्रत का अभ्यास उनको आरंभ से ही था। ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा उन्होंने दस वर्ष की अवस्था में ही ले ली थी और ७५ वर्ष की उम्र तक निबाहते जाते हैं। इसमें संदेह नहीं कि यदि विनोबा ने विवाह कर लिया होता तो वे इस प्रकार का युग-परिवर्तनकारी कार्य नहीं कर सकते थे। महात्मा गांधी और लोकमान्य तिलक की यही विशेषता थी कि वे गृहस्थ होते हुए भी सांसारिक विषयों की व्यवस्था और भली प्रकार संचालन करते हुए भी त्याग की चरम सीमा पर पहुँच सके थे। यह जीवन्मुक्त व्यक्तियों का लक्षण है, प्रत्येक का उसे प्राप्त कर सकना संभव नहीं।

पर विनोबा में ये लक्षण स्वभावतः ही पाये जाते थे। उन्होंने जो अपने पत्र में महात्मा गांधी को लिखा था कि—"मुझे कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि मेरा जन्म ही आश्रम के लिये हुआ है।" वह सत्य ही था। ऐसी दैवी विभूतियाँ किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिये संसार में आया करती हैं। विनोबा में छोटी अवस्था से ही गीताध्ययन की जो प्रवृत्ति दिखाई देती थी और उसी के अनुसार उनमें जो ज्ञान, कर्म और भक्ति का आविर्भाव हो गया था, वह उनकी इस विशेषता को प्रमाणित करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान और कर्म की मात्रा उनमें पहले ही अधिक थी, पर जनता की सेवा करते हुए भक्ति-भावना विशेष रूप से विकसित होती गई। दक्षिण-भारत की एक सभा में जब वे भाषण देने को खड़े हुए तो सामने ही कपड़े पर तेलुगु भाषा में लिखा दिखाई पड़ा—

"रामराज्यम् स्थापनचन्दि"

अर्थात् "रामराज्य की स्थापना कीजिये।" उस दिन विनोबा ने अपने भाषण में इसी की विशेष रूप से व्याख्या की और कहा—"कौन करेगा राम-राज्य की स्थापना ? इसमें संदेह नहीं कि राम-राज्य से ही दुनिया के दुःख मिटेंगे, पर राम-राज्य हो कैसे ? हमारे मन में बुरी-बुरी बातें भरी हैं, लड़ाई-झगड़े की बातें भरी हैं, 'मेरे' 'तेरे' की बात भरी है, ऊँच-नीच की बात भरी है। इनको छोड़े बिना राम-राज्य कैसे आयेगा ? राम-राज्य का मतलब है 'सबका राज'। गरीब का राज, प्रेम का राज। सब लोग होंगे सेवक, राजा होगा राम।"

यह समझाते हुए विनोबा का गला भर आया। कहने लगे—"लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा पाँच साल तो घूमे और अब कहाँ तक घूमते रहोगे ?" हम पूछते हैं कि हमारे राजा राम तो चौदह साल वन-वन में भटके थे, हमारी कीमत ही क्या है ? यह कहते-कहते विनोबा सचमुच रो पड़े। उनके हृदय में गरीबों का दर्द इतना अधिक है कि जब उनके कष्टों का ध्यान आता तो वे रोने लग जाते हैं। यह भक्ति का चरम लक्षण है। नरसी मेहता ने वैष्णव-भक्तों की व्याख्या करते हुए सत्य ही कहा है—

"वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे।"

विनोबा वेदांत और शंकराचार्य के ब्रह्मसूत्र के विद्यार्थी होने पर भी सच्चे वैष्णव थे। उन्होंने गरीबों की पीड़ा को बहुत अधिक अनुभव करके ही भूदान आंदोलन चलाया है। इसके द्वारा अब तक एकाध करोड़ व्यक्तियों की रक्षा हो ही सकी है।

ज्ञान-कर्म और भक्ति का समन्वय

विनोबा में यह ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी कितने वेग से बह रही है, इसका कुछ अनुमान उनकी पुस्तकों से मिलता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिनमें उन्होंने सब धर्मों की एक-सी खूबियाँ बतलाकर सिद्ध किया है कि विभिन्न धर्मों का सिद्धांत एक-सा ही है। उनमें जो झगड़े हुआ करते हैं, वे 'कट्टर' अथवा भ्रम में पड़े लोगों की करतूतें हैं। इसलिए ज्ञान का लक्षण यही है कि प्रत्येक सिद्धांत के सार को ग्रहण करके उनमें समन्वय की स्थापना करे। समन्वय का अर्थ है 'जोड़ना', अर्थात् अपने को मानव-समाज में घुला-मिला देना और उससे एकरूपता का अनुभव करना। 'भूदान' का काम करते हुए भी विनोबा यही कहा करते हैं कि "मेरा काम जमीन बाँटना नहीं, दिलों को जोड़ना है।"

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विनोबा ने एक काम यह भी किया है कि 'भूदान-पद-यात्रा' करते हुए विभिन्न धर्मों के प्रमुख ग्रंथों का सारांश प्रस्तुत कर दिया है, जिससे एक धर्म के मानने वाले दूसरे धर्म के स्वरूप को भी समझ सकें और उसके प्रति सद्भाव रखते हुए अच्छी बातों को सब जगह से ग्रहण कर सकें। उनकी इस प्रकार की रचनाओं की विवेचना करते हुए, उनके एक सहकारी श्री सुरेशराम ने लिखा है—

"विनोबा ने गीता से ही कार्यारंभ किया है। उन्होंने बहुत वर्ष पहले 'गीताई' के नाम से 'गीता' का मराठी पदों में अनुवाद किया था, जिसका वहाँ खूब प्रचार है। पर विनोबा जानते हैं कि संस्कृत या मराठी में कुछ लिखने से तो सब लोग उनका लाभ उठा नहीं सकते इसलिए धूलिया जेल में दंडाज्ञा भोगते हुए उन्होंने गीता के १८ अध्यायों पर १८ प्रवचन हिंदी में किये। बाद में यह इतने महत्त्वपूर्ण माने गये कि वे पुस्तकाकार छप गये और अब तक उसके ५० से अधिक संस्करण हो चुके हैं, जिनमें ५ लाख प्रतियाँ छापी गई हैं। इस पुस्तक का १८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इसके गुजराती, मराठी और तमिल अनुवाद भी एक-एक लाख प्रचारित हो चुके हैं। इसकी भूमिका में विनोबा ने लिखा है—

"मेरे जीवन में 'गीता' ने जो स्थान पांया है, उसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। 'गीता' का मुझ पर अनंत उपकार है। प्रतिदिन मैं उसका आधार लेता हूँ और प्रतिदिन मुझे उससे मदद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलती है। उसका भावार्थ जैसा मैंने समझा है, इन प्रवचनों में समझाने की कोशिश की है। मैं तो चाहता हूँ कि यह पुस्तक हर एक घर में पहुँचे, जहाँ हिंदी बोली जाती है। सब जगह इसका श्रवण, मनन और पठन हो।

इसी प्रकार उन्होंने बुद्ध भगवान् के धम्मपद का नये सिरे से संकलन किया और उसके आरंभ में लिखा कि—"यह 'धम्मपद' की नवसंहिता पढ़कर पाठकों को प्रतीत होगा कि इसमें नये सिरे से समन्वय करने की बात नहीं है। समन्वय पहले से ही मौजूद है। गौतम बुद्ध से पहले ऋषियों अर्थात् ब्राह्मणों और तपस्वी श्रमणों की एक परंपरा पहले से ही चली आ रही थी। उनके विषय में नितांत आदर रखकर गौतम बुद्ध ने अपने विचार प्रकट किये हैं। मुझे विश्वास है कि 'विश्व-मानव' के निर्माण में इससे कुछ मदद जरूर मिलेगी।"

इसी तरह अपनी कश्मीर-यात्रा के समय विनोबा ने सिक्खों के धर्म ग्रंथ 'जपुजी' का सामूहिक अध्ययन करके उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया और उसकी प्रस्तावना में लिखा—

"यह नाम स्मरण की पुस्तक है। इसमें सत्पुरुष भगवान् की उपासना है। हम 'सत्यनिष्ठ' कैसे बनें ? ऐसा प्रश्न आरंभ में ही उपस्थित किया है। अंत में समस्त साधना का सारांश निर्भय और 'निरवैर' इन दो शब्दों में बता दिया है। आज मनुष्यों के सामने जो समस्याएँ उपस्थित हैं, उनका हल इन दो शब्दों में मौजूद है।"

जब विनोबा ने इसी प्रकार 'कुरान' का सार निकालने का निश्चय किया, तो लोगों ने इस कार्य में अनेक कठिनाइयाँ बतलाईं। उनमें सबसे मुख्य यही थी कि कहीं मुसलमान अपने धर्म-ग्रंथ का इस प्रकार संक्षिप्त संस्करण बनाने से नाराज न हो जाएँ। पर विनोबा की भावना पूर्ण रूप से निष्पक्ष और शुद्ध थी। इसलिए उन्होंने एक संकलन तैयार करके उसे "रूहुल कुरान" के नाम से प्रकाशित कराया। इसकी प्रस्तावना में कहा गया है—

"साइंस ने दुनिया छोटी बना दी और सब इंसानों को नजदीक लाना चाहता है। ऐसी हालत में इंसानी-समाज फिरकों में बँटा रहे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर जमात अपने को ऊँचा और दूसरे को नीचा समझे, यह कैसे चलेगा ? हमें एक-दूसरे को ठीक समझना होगा, एक-दूसरे के सद्‌गुण को हासिल करना होगा। वर्षों से भूदान के लिए मेरी पद-यात्रा चलती रही, जिसका मुख्य उद्‌देश्य दिलों को जोड़ना है। बल्कि मेरी जिंदगी के कुछ काम दिलों को जोड़ने के सदुद्‌देश्य से ही प्रेरित हैं।''

इसके बाद विनोबा ने ईसाई धर्मग्रंथ 'बाइबिल' के 'न्यू टेस्टामेंट' का अध्ययन शुरू किया। वैसे वे ४०-५० साल से बाइबिल को पढ़ते रहे हैं, पर अब समन्वयवादी दृष्टिकोण से उसका सार निकालना है।

"विनोबा के विचारानुसार सब धर्मों का उद्‌देश्य लोगों के बीच मेल-मिलाप और सौहार्द्र पैदा करना है कि जो 'धर्म' जोड़ने के लिए बना है, वही तोड़ने का काम करने लगा और हजारों-लाखों 'धर्म' के नाम पर मारे-काटे गये। इसीलिए अब 'धर्म' या 'मजहब' के दिन लद गये। साथ ही राजनीति का जमाना भी खत्म हुआ। विज्ञान के इस युग में दुनिया को अध्यात्म या रुहानियत का रास्ता ही अपनाना होगा, जहाँ राजनीति और विज्ञान का गठबंधन होने से उसका नतीजा सर्वनाश होता है, वहाँ अगर अध्यात्म और विज्ञान एक हो जाए तो दुनिया में स्वर्ग का अवतरण होने लगेगा। विज्ञान का फायदा उठाना है, उससे काम लेना है तो उसके साथ अध्यात्म को जोड़ना होगा और यदि उससे फायदा न उठाना हो, उनकी बदौलत मर मिटना हो तो बीच में राजनीति को लाना चाहिए।''

इस समय संसार के ऊपर जो संकट के बादल छा रहे हैं और जगह-जगह युद्ध की आग भड़क रही है, उसके दो ही कारण हैं—एक दलबंदी और दूसरा विज्ञान का दुरुपयोग। पहली खराबी के बढ़ने का मुख्य कारण कृत्रिम राष्ट्रीयता अथवा विभिन्न धर्मों में भेद करने की प्रवृत्ति है और दूसरी खराबी राजनीतिज्ञों और बड़े व्यवसायियों द्वारा विज्ञान को लूटने-मारने का साधन बना लेना है। जब विज्ञान के साथ अध्यात्म का मेल हो जाएगा तो उसका वर्तमान नक्शा बिल्कुल बदल जाएगा। तब एटमबम तथा राकेटों की खोज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के बजाय, वैज्ञानिक उन विधियों की कोशिश करने लगेंगे जिनसे लोगों का ठीक ढंग से भरण-पोषण हो और वे पूर्ण स्वस्थ दीघार्यु और सुखी बनें।

सादगी और संयम का जीवन—

इतने बड़े विद्वान् और इतने बड़े नेता होकर भी विनोबा में न तो अहंकार था और न किसी प्रकार की उनमें बनावट या दिखावा। इन्होंने वैदिक सभ्यता के सिद्धांतानुसार सन् १९१८ से ही सिले हुए कपड़े पहनना छोड़ दिया था। एक ही धोती को आधी बाँध लेते और आधी ओढ़ लेते थे। भोजन में नमक तक का त्याग भी उसी समय से कर रखा था। फिर किसी प्रकार के व्यसन की तो कल्पना ही कैसे की जा सकती ? गांधी जी के आश्रम में रहकर प्रतिदिन चौदह से सोलह घंटे तक कठोर श्रम करते रहे। अध्यापन, रसोई से लेकर मेहनत तक का काम करते थे और भोजन बहुत ही सादा तथा मात्रा में भी बहुत कम। इस प्रकार की तपस्या वर्षों तक करते रहने पर शरीर सूख गया। अधिक पढ़ने से आँखें भी खराब हो गयीं। पर दूसरी तरफ इसका परिणाम यह हुआ कि बड़े-बड़े नेता भी इनको सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। सन् १९२१ में ही सेठ जमनालाल बजाज ने वर्धा में एक आश्रम स्थापित किया, तो उन्होंने उसकी व्यवस्था के लिए विनोबा को माँगा। महात्मा जी को उन्हें अपने से अलग करने में कुछ कष्ट मालूम हुआ, तो भी उन्होंने सत्याग्रह का एक नया और सुदृढ़ केंद्र स्थापित करने के उद्देश्य से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। विनोबा ने वर्धा आश्रम को किस प्रकार गांधी जी के आंदोलन का एक प्रधान स्तंभ बनाया, इस संबंध में इनके जीवन-चरित्र में एक स्थान पर कहा गया है—

"वर्धा आश्रम के चलाने में विनोबा जी को कठिन परिश्रम करना पड़ा। खादी-कार्य से संबंधित प्रयोगों में इनका प्रमुख योग रहा। लगातार कई घंटे तक चर्खा और तकली के साथ बैठना इनका नित्य कर्तव्य था। खादी प्रचार की मूल-भावना क्या है ? इसे लोगों को समझाने की चेष्टा वे सदैव किया करते थे। साथ ही कातना, धुनना, बुनना आदि क्रियाओं का भी उन्होंने पर्याप्त अध्ययन किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उनका ज्ञान दूसरों को भी कराया। इसके अनेक नये-नये प्रयोग भी इन्होंने निकाले। यह कहा जा सकता है कि प्रयोग, भाषण तथा लेखन द्वारा विनोबा जी ने जितना खादी का काम किया, उतना महात्मा जी को छोड़कर किसी ने नहीं किया। इस संबंध में स्वयं महात्मा जी ने लिखा था—

"विनोबा का यह विचार है कि व्यापक कताई को सारे कार्यक्रम का केंद्र बनाने से ही गाँवों की गरीबी दूर हो सकती है। कताई को बुनियादी मानकर इन्होंने 'मूल उद्योग कातना' नामक पुस्तक भी लिखी है, जिसका हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में बहुत अधिक प्रचार हुआ है।"

विनोबा का कहना था कि संस्थाओं के स्थापित करने का उतना महत्त्व नहीं है, जितना कि अकेले ही जो बन पड़े उसे पूरी सच्चाई के साथ करते जाने का, संस्था में प्रायः बड़प्पन और पद-लोलुपता का भाव उत्पन्न होता है, जो हानि ही पहुँचाती है। एक बार कोई बड़े कार्यकर्ता विनोबा के पास आये और एक संस्था स्थापित करने के संबंध में उनकी सम्मति पूछी। इन्होंने कहा—"आपको अनासक्त बुद्धि से सच्ची सेवा करनी हो, तो संस्था खोलने के झमेले में मत पड़िये। स्वयं जितना बन सके उतना सेवा-कार्य, बड़प्पन की इच्छा न रखते हुए करते रहिये। इसी से जनता की सच्ची भलाई हो सकेगी।"

विनोबा का सच्चा धर्म—

विनोबा परम धार्मिक थे। यदि अच्छी तरह जाँच-पड़ताल की जाए, तो उनके मुकाबले के धार्मिक व्यक्ति देश भर में सौ-पचास भी मुश्किल से मिलेंगे। जिस मनुष्य ने देश और समाज की सेवा के लिए बाल्यावस्था से घर के समस्त सुखों का त्याग कर दिया और आजन्म एकाकी रहकर ब्रह्मचर्य-व्रत का कठोरतापूर्वक पालन किया, जिसने परोपकार और परमार्थ के लिए महान् तपस्यामय जीवन बिताया उसे कौन धार्मिक न कहेगा ?

पर विनोबा सच्चे धर्म का आचरण करने वाले थे। ऊपरी दिखावा और ढोंग से कोसों दूर रहने वाले थे। इसलिए जहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य-धर्म के अनुयायी उनको एक दैवी-आत्मा की तरह पूजते थे, वहाँ लकीर के फकीर और धर्म के नाम पर दुराग्रह करने वाले उनको गालियाँ देते रहे, तरह-तरह से अपमानित करते रहे। बिहार का भ्रमण करते हुए जब वे देवघर पहुँचे तो कुछ लोगों ने उनसे वैद्यनाथ धाम के मंदिर में जाने को कहा। विनोबा ने उत्तर दिया कि मेरे साथ तो हरिजन भाई भी जाते हैं, इसलिए मंदिर के पुजारी रजामंद हों तो मैं जाऊँगा अन्यथा नहीं। पहले तो कुछ पुजारियों ने 'हाँ' कह दी, पर जब वे अपनी समस्त मंडली के साथ पहुँचे तो दरबाजे पर ही मंदिर वालों ने मार-पीट शुरू कर दी। विनोबा के साथियों ने स्वयं मार सहन करके उनको बचाने की चेष्टा की, तो भी उनको कुछ चोटें लगीं, जिससे बायाँ कान खराब हो गया। वे मंदिर से वापस चले आये, सबसे कह दिया कि इस घटना के लिए किसी के विरुद्ध कुछ कार्यवाही न की जाए। इसके पश्चात् बिहार के मुख्यमंत्री स्वयं अनेक हरिजनों को लेकर वैद्यनाथ के मंदिर में गये और वह सदा के लिए अछूतों के लिए खोल दिया गया।

जब वे केरल पहुँचे तो गुरुवयूर के मंदिर में आमंत्रित किया गया। पर विनोबा ने कहा, मेरे साथ कुछ स्थानीय ईसाई भी रहने लगे हैं, उनको रोका तो न जायेगा ? पुजारियों ने इसे स्वीकार न किया और विनोबा ने वहाँ का कार्यक्रम रद्द कर दिया।

कर्नाटक में गोकर्ण महाबलेश्वर का प्रसिद्ध मंदिर है। जब विनोबा को मंदिर के पुजारियों ने बुलाया तो उनके साथ सलीम नाम का एक भूदानी कार्यकर्ता भी था। उन्होंने यह बात मंदिर वालों को बतला दी और उन्होंने इसे खुशी से स्वीकार कर लिया। तब वे प्रसन्नतापूर्वक सलीम के साथ दर्शन करने पहुँचे।

महाराष्ट्र में सबसे बड़ा तीर्थ पंढरपुर है, जहाँ नामदेव आदि अनेक संत हो गये हैं। जब विनोबा भूदान के लिए भ्रमण करते वहाँ पहुँचने वाले थे तो कुछ विघ्नकर्ताओं ने पहले ही अफवाह उड़ा दी कि 'विनोबा' कुछ धर्मभ्रष्ट लोगों को लेकर आ रहे हैं और उनके साथ मंदिर में घुसेंगे। पर वे ऐसे मनाही वाले स्थानों में स्वयं ही नहीं जाते, क्योंकि पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न करना उनको बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नापसंद है। इसलिए अफवाह फैलाने वाले स्वयं ही जनता के सामने झूठे पड़ गये।

जब पुंडलीक मंदिर वालों ने स्वयं उनके पास आकर कहा—"बाबा ! आप हमारे मंदिर में अवश्य पधारें। आपके परिवार में जो भी लोग हैं, वे भले ही दूसरे धर्म के हों, पर वे सब भक्त ही हैं। उन्हें लेकर आप जरूर आइये।"

बाबा ने कहा—"अच्छा हो, आप अपना निमंत्रण लिखकर दे दें ?"

उन्होंने लिखकर दे दिया। इस समाचार को जानकर रुक्मिणी और विट्ठल मंदिरों के संचालक भी उनके पास पहुँचे और वैसा ही निमंत्रण-पत्र दे आये। तीनों पत्रों को पढ़कर विनोबा आनंद से गद्‌गद् हो गये और कहने लगे कि 'इन पंढरपुर के पुजारियों ने अपने प्रेम से मुझे जीत लिया। अब मैं उनके यहाँ अवश्य जाऊँगा।"

दूसरे दिन सबेरे वे अपने पूरे परिवार के साथ मंदिर में गये। उनके साथ हरिजन, मुसलमान, ईसाई सब थे। बीबी फातमा भी थी और जर्मनी की लड़की 'हेमा' भी थी।

जब विनोबा अजमेर पहुँचे तो वहाँ की देश प्रसिद्ध ख्वाजा साहब की दरगाह वालों ने उन्हें बुलाया। वे सर्वोदय सम्मेलन के दस हजार प्रतिनिधियों के साथ दरगाह में पहुँचे और वहाँ उन्होंने 'गीता' की प्रार्थना की। दरगाह वालों ने उनका बड़ा आदर किया और पगड़ी बाँधी।

पाठक विचार करें कि कौन-सा धर्म-मार्ग कल्याणकारी और सच्चा है ? क्या वैद्यनाथ धाम के पुजारियों का 'धर्म' जिन्होंने जन-कल्याण के तन, मन, धन अर्पण कर देने वाले महापुरुषों पर लाठियाँ चलाईं ? अथवा विनोबा का 'धर्म' जिन्होंने 'फातमा' और 'हेमा' जैसे दूरवर्ती व्यक्तियों को भगवान् का भक्त और गरीबों का सेवक बना दिया ? वे भगवान् पर पूर्ण श्रद्धा रखते थे, उसी का नाम लेकर खूनी और डाकुओं के बीच चले जाते थे, पर वे उसी भगवान् के उपासक रहे, जो दीन-दुःखियों, भूखे-नंगों की खबर ले। वे कहते हैं कि "जब ये भूखे-प्यासे, दरिद्र-नारायण हमारे सामने खड़े हैं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम उनकी तरफ से निगाह फेरकर पत्थर की मूर्ति के लिए घर बनायें, कपड़े पहिनायें, भोग लगायें, तो कैसे चलेगा ? हमारा आज का धर्म तो यही है कि हम इस भूखे-नंगे और सर्दी से ठिठुरने वाले भगवान् को खिलायें-पिलायें, उसे कपड़े पहिनायें, उसके निवास स्थान की व्यवस्था करें।

कथनी और करनी में ऐक्य—

विनोबा बड़े शिक्षाप्रेमी थे और उन्होंने शिक्षा देकर ऐसे बहुसंख्यक कार्यकर्ता तैयार किये, जिनकी गति किसी क्षेत्र में नहीं रुकती और जो कहीं असफल होना जानते ही नहीं। गांधी जी कहा करते थे कि—"विनोबा के पास निर्भय, तेजस्वी, कर्तव्यपरायण अनुयायियों की जैसी मजबूत सेना है, वैसी मेरे पास भी नहीं है।"

पर इसका रहस्य यही था कि विनोबा जिसको जो शिक्षा देते थे, वह केवल मौखिक अथवा पुस्तकीय ही नहीं होती थी, वरन् वे अपने व्यवहार और उदाहरण से ही दूसरों को शिक्षा देते थे। उन्होंने कताई, बुनाई, सफाई व सेवा, कोढ़ियों की सेवा, ग्राम शिक्षा आदि बीसियों कार्य आरंभ किये और इन कार्यकर्ताओं के द्वारा सबमें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करके दिखाई।

विनोबा की महानता को संक्षेप में इतने में ही कहा जा सकता है कि वे 'नेताओं के भी नेता' थे। महात्मा गांधी कोई नया आंदोलन या कार्यक्रम शुरू करने के पहले इनसे सलाह ले लिया करते थे और प्रधानमंत्री श्री नेहरू जी ने भी इनकी जयंती के अवसर पर कहा था—"मैं थोड़ा-बहुत सारी दुनिया से वाकिफ हूँ। जो लोग बड़े कहलाते हैं उनसे मिला हूँ। दुनिया में जो माकूल आदमी, समझदार आदमी, हर तरह के अच्छे आदमी कहलाते हैं, उनसे भी मिला हूँ। लेकिन मैं अक्सर सोचता हूँ कि किसी और देश में विनोबा का-सा आदमी नहीं है।" जिसके संबंध में आधुनिक भारत के ये दो निर्माता ऐसी सम्मति प्रकट करें उसके लिए कहने को शेष क्या रह जाता है ?

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org